PGCBHT

बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम
(पी.जी.सी.बी.एच.टी.)

सत्रीय कार्य
2019

(जनवरी 2019 और जुलाई 2019 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम
(पी.जी.सी.बी.एच.टी.)
सत्रीय कार्य 2019

(जनवरी 2019 और जुलाई 2019 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.बी.एच.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम' (पी.सी.बी.एच.टी.) की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस अध्ययन कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ–साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। चार पाठ्यक्रमों वाले इस कार्यक्रम के तीन पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक–एक सत्रीय कार्य करना होगा और चौथा पाठ्यक्रम 'अनुवाद परियोजना' से संबंधित है। सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग–अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं! सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि इस प्रकार हैं :

पाठ्यक्रम कोड एवं शीर्षक	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि	
	जनवरी 2019 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जुलाई 2019 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
एम.टी.टी.–001 भारतीय भाषाओं में अनुवाद	**31.03.2019**	**30.09.2019**
एम.टी.टी.-002 बांग्ला–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन	**31.03.2019**	**30.09.2019**
एम.टी.टी.–003 बांग्ला–हिंदी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद	**31.03.2019**	**30.09.2019**

उद्देश्य : प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको भारतीय भाषाओं में अनुवाद, बांग्ला–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन के साथ–साथ इन भाषाओं के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।

2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर–पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके तीन सत्रीय कार्यों के लिए तीन उत्तर–पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।

3) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।

4) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक :	नामांकन संख्या : ....
	नाम : ....
	पता : ....
	....
पाठ्यक्रम कोड :..	
पाठ्यक्रम का शीर्षक :	
सत्रीय कार्य कोड :	हस्ताक्षर :...
अध्ययन केंद्र का नामः	तिथि : ....

5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6) अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बायीं ओर 4 से.मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएँगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

- सत्रीय कार्य में दिए गए निर्देशों के अनुसार उत्तर लिखिए। व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।

- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और उसमें यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं, उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।

- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक हैं, तब उन्हें साफ–साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।

- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विशय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। बांग्ला और हिंदी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की–सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन–क्षमता का उपयोग करें।

- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों।

भारतीय भाषाओं में अनुवाद (एमटीटी-001)

सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोडः पीजीसीबीएचटी

पाठ्यक्रम कोडः एमटीटी-001

पूर्णांकः 100

नोटः सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। लगभग 300 शब्दों में उत्तर दीजिए।

---

1. भारतीय भाषा परिवारों के वर्गीकरण को समझाते हुए उनके बारे में प्रकाश डालिए।
2. बहुभाषिक समाजों में अनुवाद की प्रक्रिया के बारे में समझाएं।
3. नाटकों का अनुवाद किस तरह दूसरी साहित्यिक सामग्री से जटिल है? सोदाहरण चर्चा कीजिए।
4. कविता का अनुवाद करते समय गद्य की अपेक्षा किस तरह की सावधानियां बरतने की जरूरत होती है? सोदाहरण विवेचन कीजिए।
5. आशु अनुवाद की कब और कहाँ जरूरत पड़ती है ? इसका महत्व भी बताइए।
6. अनुवाद में पुनर्सृजन से आप क्या समझते हैं ? साहित्यिक अनुवाद में इसका महत्व स्पष्ट कीजिए।
7. साहित्यिक सामग्री और सूचनात्मक सामग्री के अनुवाद में क्या अंतर होता है ? सोदाहरण चर्चा कीजिए ।
8. मुहावरों और लोकोक्तियों का अनुवाद करते समय किस प्रकार दो भाषाओं की सामाजिक और सांस्कृतिक बनावट बाधा पैदा करती है ? उदाहरण सहित बताइए।
9. विज्ञापनों का अनुवाद करते समय किस प्रकार की सावधानी बरतने की जरूरत होती है ? उदाहरण सहित समझाइए।
10. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

    (क) व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा देने में अनुवाद की भूमिका

    (ख) मशीनी अनुवाद की जरूरत और विश्वसनीयता

बांग्ला-हिंदी अनुवादः तुलना और पुनर्सृजन (एमटीटी-002)

कार्यक्रम कोडः पीजीसीबीएचटी

पाठ्यक्रम कोडः एमटीटी-002

पूर्णांकः 100

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **10X2=20**

1. बांग्ला और हिंदी में शब्द रचना संबंधी समानताओं और असमानताओं के बारे में उदाहरण सहित समझाइए।

   अथवा

   बांग्ला से हिंदी में अनुवाद की परंपरा पर प्रकाश डालिए।

2. कविता का अनुवाद करते समय किस प्रकार की कठिनाइयां पैदा होती हैं और उनसे पार पाने के लिए किन सावधानियों की आवश्यकता होती है, उदाहरण सहित समझाइए।

3. निम्नलिखित बांग्ला शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए- 10

ধর্মীয়	পরিচ্ছন্ন	অসুবিধা	অরণ্য	পিপাসু
বাসিন্দা	ধরনের	সহযাত্রী	পরিচয়	কুশল
দয়া	যখনই	বেশি	কোথায়	ডাল
চাল	দাম	চড়া	ফেরার	ফুরিয়ে

4. निम्नलिखित हिंदी शब्दों के बांग्ला पर्याय लिखिए- 10

दुधारू	डकैती	बिल्ली	डर	गुनगुना
घमंड	धोखा	परेशान	निपटाना	लगभग
असुविधा	आंगन	मिलना	वहां	इसलिए
ज्यादा	मैदान	नया	पहले	निकलना

5. निम्नलिखित बांग्ला वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए। 10

1. আহা কি সুন্দর দৃশ্য
2. প্রসাদ গ্রহণ করা হোক
3. তোমার যাত্রা শুভ হোক
4. যদি বৃষ্টি হয় তবে এ রাস্তায় জল ভরে যাবে
5. বিকেলে সংভবতঃ বৃষ্টি হবে
6. খবরদার, বাইরে যাবে না
7. মন দিয়ে পড়াশোনা কর
8. দয়া করে এখানেই বসূন

9. আরে ভাবছো কেনো

10. আমি কি জানতাম

6. **निम्नलिखित हिंदी वाक्यों का बांग्ला में अनुवाद कीजिए।** **10**

a. तुम्हें बाजार जाना चाहिए

b. आज ही लौट आना

c. उसे बातें करने में बहुत आनंद आता है

d. लोग बातें भूल जाते हैं

e. परीक्षा के समय मुझे घबराहट नहीं होती

f. सुना है, तुम्हारी माताजी बीमार हैं

g. तुम अजीब बातें करते हो!

h. तुमसे ऐसा किसने कहा?

i. उसने क्या गजब बैटिंग की!

j. आते जाते रहा करो

7. **निम्नलिखित बांग्ला गद्यांशों का हिंदी में अनुवाद कीजिए।** **10X2=20**

(A) ব্ল্যাক ডেথের বিভীষিকা অস্তমিত হতে ইওরোপে যেমন বাণিজ্যের দরজা খুলে গেল, এশিয়াতেও তেমনি। নৌ-পরিবহনে জোয়ার এলো। চিনের পূর্ব-উপকূলের সঙ্গে দক্ষিণ ভারতের ও পারস্য উপসাগরের বাণিজ্য চলতে লাগল চুটিয়ে। রাজা ও সম্রাটেরা বুঝতেন বাণিজ্যেই লক্ষ্মীলাভ, কেননা তা থেকে প্রাপ্ত কর সরাসরি জমা পড়ে রাজ-কোষাগারে, তা দিয়েই তাদের বারফট্টাই। কাজেই বাণিজ্যের সুরক্ষা আর লোক ঠকানো বন্ধ করতে বস্তুর গুণাগুণ নিয়ন্ত্রণ — সব কিছুর জন্যই রাজ-অনুগ্রহে নতুন নতুন সংস্কার জন্ম হতে লাগল। এই সংস্কার কাজ ছিল বাণিজ্যিক সংগঠনগুলোর মধ্যে সুস্থ সম্পর্ক তৈরিতে সাহায্য করা ও এমন নিয়মকানুন তৈরি করা যাতে জিনিসপত্র সহজে এবং সঠিক দামে কেনাবেচা সম্পন্ন হতে পারে। পঞ্চদশ শতাব্দীর প্রথমদিকে চৈনিক পরিব্রাজক মা হুয়ান ভারতে এসে দেখলেন, ক্রেতা-বিক্রেতার মধ্যে মাল চালাচালি কী দামে হবে, তা ঠিক করে দেয় এক দালাল। সেই বলে দেয় তার ওপর প্রদেয় কর কত। আগে কর চুকিয়ে দিলে তারপরই জিনিসপত্র হাতবদল হবে, তার আগে নয়। মা হুয়ান বললেন, নিয়মটা বেশ সুন্দর তো, লোকজনও ভীষণ সৎ ও বিশ্বাসযোগ্য।

বস্তুত, বাণিজ্যে সততাই একমাত্র মূলধন কথাটা আদপেই অতিশয়োক্তি নয়। বিদেশিদের সঙ্গে ভারতের বাণিজ্য এই নীতির ওপরেই প্রতিষ্ঠিত ছিল। তার মানে এই নয় যে প্রতিযোগিতা ছিল না। তাও ছিল ভাল ভাবেই। কোচিন উঠে আসছিল কালিকটের সঙ্গে প্রতিযোগিতা করতে। এই প্রতিযোগিতার মূলে ছিল সহজতর কর ব্যবস্থা। কর ছাড় দিলে জিনিসের দাম কমে, ফলে সেই বস্তু কিনতে বণিকরা তো উৎসাহী হবেই। ভারত ও পার্শ্ববর্তী উপকূল থেকে বাণিজ্য-উপযোগী বস্তু আহরণ করতে তাই শুরু হল একের পর এক চৈনিক অভিযান। চিনা বণিক জেং হে এক বিশাল বাহিনী নিয়ে বের হলেন বাণিজ্য করতে। শুধু বাণিজ্যই নয়, তার উদ্দেশ্য পৃথিবীকে দেখানো, দেখো, আমাদের নৌবাহিনী কত বিশাল, আমরা সমগ্র পৃথিবীর জলপথ শাসন করতে পারি। ভারত মহাসাগর, পারস্য উপসাগর, লোহিত সাগরের বন্দরগুলোতে তার বাণিজ্যতরী ভিড়ানোর পাশাপাশি তিনি উদগ্রীব ছিলেন কোচিনের রাজার সঙ্গে বন্ধুত্ব করতেও, কেননা কোচিন তখন কালিকটের সঙ্গে পাল্লা দিতে করের মাত্রা অনেকটাই কমিয়ে দিয়েছিল।

(B) সুন্দরবনে মাতলা নদীর মোহনার ধারে বড় সুন্দরীগাছের গুঁড়িতে হেলান দিয়ে ল্যাজটা দোলাতে দোলাতে বাঘ বললো, "নাঃ, মাংস খাওয়া ছেড়ে দেবো এবার।"

বাঘমামার মাথার পাশে বসে একটা শালপাতার পাখা নিয়ে মামাকে হাওয়া করছিলো শেয়াল। কথাটা

শুনে চমকে উঠে বললো, "মানে?"
-- না রে, ওজন বড় বেড়ে যাচ্ছে। আর তা ছাড়া বেশি মাংস খাওয়া তো শরীরের পক্ষে ভালো নয়!
-- কে বলেছে তোমাকে যে বেশি মাংস খাওয়া শরীরের পক্ষে ভালো নয়?
-- আরে সবাই জানে। ব্লাড প্রেসার, কোলেস্টেরল, ট্রাইগ্লিসারাইড -- আর কত বলবো? নাঃ, মাংস খাওয়াটা ছেড়েই দেবো এবার!
-- তবে খাবে কি?
এবারে খেঁকিয়ে উঠলো বাঘ, "কেন? মাংস না খেয়ে কি লোকে বাঁচে না?"

মামার কথার যুক্তি কী করে অস্বীকার করে শেয়াল, বিশেষ করে মামা যখন দাঁত বের করে খেঁকাচ্ছে। তবে মনে মনে প্রমাদ গোনে সে।

মাঝে মধ্যে এরকম সব উটকো ঝামেলা অবশ্য বাঘমামা তৈরী করেই চলে। এই যেমন গত বছরে তীর্থযাত্রা করার সময়ে কুমায়ুনের কিছু সাত্বিক মানুষখেকো বাঘ তার বাঘমামাকে বুঝিয়ে ছেড়েছিলো যে গোরু খাওয়ার মতো পাপ পৃথিবীতে আর কোনকিছুতে নেই। অনেক কষ্টে নিজের পয়সায় মামাকে নিজামের গোস্ত-কাবাব খাইয়ে লাইনে এনেছিলো শেয়াল। মামা বেলাইনে গেলে তার মহা অসুবিধে। মামার শিকারের উচ্ছিষ্টে তার পেট ভরাতে কোনো অসুবিধে হয় না। কিন্তু মামা খাবার না জোগালে নিজেকেই খেটেখুটে খাবারের সন্ধানে ঘুরতে হয়। তাতে ঝামেলা অনেক।

তবে এবারের সমস্যাটা মনে হচ্ছে অনেক বড় মাপের। শুনে মনে হয় জল বহুদূর গড়াবে। ওজন বেড়ে যাওয়া ...মাংস ছেড়ে দেওয়া ... মামাকে আবার লাইনে আনতে মনে হচ্ছে বেগ পেতে হবে প্রচুর।

8. **निम्नलिखित हिंदी गद्यांश का बांग्ला में अनुवाद कीजिए।** **10**

गजाधर बाबू खुश थे, बहुत खुश। पैंतीस साल की नौकरी के बाद वह रिटायर हो कर जा रहे थे। इन वर्षों में अधिकांश समय उन्होंने अकेले रह कर काटा था। उन अकेले क्षणों में उन्होंने इसी समय की कल्पना की थी, जब वह अपने परिवार के साथ रह सकेंगे। इसी आशा के सहारे वे अपने अभाव का बोझ ढो रहे थे। संसार की दृष्टि में उनका जीवन सफल कहा जा सकता था। उन्होंने शहर में एक मकान बनवा लिया था, बड़े लड़के अमर और लड़की कांति की शादियाँ कर दी थीं, दो बच्चे ऊँची कक्षाओं में पढ़ रहे थे। गजाधर बाबू नौकरी के कारण प्रायः छोटे स्टेशनों पर रहे और उनके बच्चे और पत्नी शहर में, जिससे पढ़ाई में बाधा न हो। गजाधर बाबू स्वभाव से बहुत स्नेही व्यक्ति थे और स्नेह के आकाक्षी भी। जब परिवार साथ था, ड्यूटी से लौट कर बच्चों से हँसते-बोलते, पत्नी से कुछ मनोविनोद करते, उन सबके चले जाने से उनके जीवन में गहन सूनापन भर उठा। खाली क्षणों में उनसे घर में टिका न जाता। कवि प्रकृति के न होने पर भी उन्हें पत्नी की स्नेहपूर्ण बातें याद आती रहतीं। दोपहर में गर्मी होने पर भी, दो बजे तक आग जलाए रहती और उनके स्टेशन से वापस आने पर गरम-गरम रोटियाँ सेंकती... उनके खा चुकने और मना करने पर भी थोड़ा-सा कुछ और थाली में परोस देती, और बड़े प्यार से आग्रह करती। जब वह थके-हारे बाहर से आते, तो उनकी आहट पा वह रसोई के द्वार पर निकल आती और उसकी सलज्ज आँखें मुस्करा उठतीं। गजाधर बाबू को तब हर छोटी बात भी याद आती और वे उदास हो उठते... अब कितने वर्षों बाद वह अवसर आया था, जब वे फिर उसी स्नेह और आदर के मध्य रहने जा रहे थे।

टोपी उतार कर गजाधर बाबू ने चारपाई पर रख दी, जूते खोल कर नीचे खिसका दिए, अंदर से रह-रह कर कहकहों की आवाज आ रही थी। इतवार का दिन था और उनके सब बच्चे इकट्ठे हो कर नाश्ता कर रहे थे। गजाधर बाबू के सूखे चेहरे पर स्निग्ध मुस्कान आ गई, उसी तरह मुस्कराते हुए वे बिना खाँसे अंदर चले आए। उन्होंने देखा कि नरेंद्र कमर पर हाथ रखे शायद गत रात्रि की फिल्म में देखे गए

किसी नृत्य की नकल कर रहा था और बसंती हँस-हँस कर दुहरी हो रही थी। अमर की बहू को अपने तन-बदन, आँचल या घूँघट का कोई होश न था और वह उन्मुक्त रूप से हँस रही थी। गजाधर बाबू को देखते ही नरेंद्र धप से बैठ गया और चाय का प्याला उठा कर मुँह से लगा लिया। बहू को होश आया और उसने झट से माथा ढक लिया, केवल बसंती का शरीर रह-रह कर हँसी दबाने के प्रयत्न में हिलता रहा।

अथवा

प्रेमचंदजी की सेवा में उपस्थित होने की इच्छा बहुत दिनों से थी। यद्यपि आठ वर्ष पहले लखनऊ में एक बार उनके दर्शन किए थे, पर उस समय अधिक बातचीत करने का मौका नहीं मिला था। इन आठ वर्षों में कई बार काशी जाना हुआ, पर प्रेमचंदजी उन दिनों काशी में नहीं थे। इसलिए ऊपर की चिट्ठी मिलते ही मैंने बनारस कैंट का टिकट कटाया और इक्का लेकर बेनिया पार्क पहुँच ही गया। प्रेमचंद जी का मकान खुली जगह में सुंदर स्थान पर है और कलकत्ते का कोई भी हिंदी पत्रकार इस विषय में उनसे ईर्ष्या किए बिना नहीं रह सकता। लखनऊ के आठ वर्ष पुराने प्रेमचंदजी और काशी के प्रेमचंदजी की रूपरेखा में विशेष अंतर नहीं पड़ा। हाँ मूँछों के बाल जरूर 53 फीसदी सफेद हो गए हैं। उम्र भी करीब-करीब इतनी ही है। परमात्मा उन्हें शतायु करे, क्योंकि हिंदी वाले उन्हीं की बदौलत आज दूसरी भाषा वालों के सामने मूँछों पर ताव दे सकते हैं। यद्यपि इस बात में संदेह है कि प्रेमचंदजी हिंदी भाषा-भाषी जनता में कभी उतने लोकप्रिय बन सकेंगे, जितने कवि मैथिलीशरण जी हैं, पर प्रेमचंदजी के सिवा भारत की सीमा उल्लंघन करने की क्षमता रखने वाला कोई दूसरा हिंदी कलाकार इस समय हिंदी जगत में विद्यमान नहीं। लोग उनको उपन्यास सम्राट कहते हैं, पर कोई भी समझदार आदमी उनसे दो ही मिनट बातचीत करने के बाद समझ सकता है कि प्रेमचंदजी में साम्राज्यवादिता का नामोनिशान नहीं। कद के छोटे हैं, शरीर निर्बल-सा है। चेहरा भी कोई प्रभावशाली नहीं और श्रीमती शिवरानी देवी जी हमें क्षमा करें,यदि हम कहें कि जिस समय ईश्वर के यहाँ शारीरिक सौंदर्य बँट रहा था, प्रेमचंदजी जरा देर से पहुँचे थे। पर उनकी उन्मुक्त हँसी की ज्योति पर, जो एक सीधे-सादे, सच्चे स्नेहमय हृदय से ही निकल सकती है,कोई भी सहृदया सुकुमारी पतंगवत् अपना जीवन निछावर कर सकती है। प्रेमचंदजी ने बहुत से कष्ट पाए हैं, अनेक मुसीबतों का सामना किया है, पर उन्होंने अपने हृदय में कटुता को नहीं आने दिया। वे शुष्क बनियापन से कोसों दूर हैं और बेनिया पार्क का तालाब भले ही सूख जाए, उनके हृदय सरोवर से सरसता कदापि नहीं जा सकती। प्रेमचंदजी में सबसे बड़ा गुण यही है कि उन्हें धोखा दिया जा सकता है। जब इस चालाक साहित्य-संसार में बीसियों आदमी ऐसे पाए जाते हैं, जो दिन-दहाड़े दूसरों को धोखा दिया करते हैं, प्रेमचंदजी की तरह के कुछ आदमियों का होना गनीमत है। उनमें दिखावट नहीं, अभिमान उन्हें छू भी नहीं गया और भारत व्यापी कीर्ति उनकी सहज विनम्रता को उनसे छीन नहीं पाई।

9. निम्नलिखित मुहावरों/ लोकोक्तियों का हिंदी में अनुवाद कीजिए। 10

1. হাড় গুড়োন
2. সাতখূন মাফ
3. যেমন কর্ম তেমন ফল
4. শিমূল ফূল
5. বূক ফেটে যাওবা
6. আধাগাগরী জল, করে ছলছল
7. আকাশ কুসুম চয়নে
8. অতি ভক্তি চোরের লক্ষণ

৭. তিল থেকে তাল

১০.বিপদকালে বুদ্ধিনাশ

बांग्ला-हिंदी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद (एमटीटी-003)

कार्यक्रम कोडः पीजीसीबीएचटी

पाठ्यक्रम कोडः एमटीटी-003

पूर्णांकः 100

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **10**

1. बांग्ला से हिंदी में विज्ञापनों का अनुवाद करते समय किस तरह की कठिनाइयां सामने आती हैं और उनमें क्या सावधानी बरती जानी चाहिए।

अथवा

बांग्ला से हिंदी में अनुवाद करते समय भाषा संबंधी कौन-सी भूलें होने की संभावना रहती है और उनसे बचने के क्या उपाय हो सकते हैं।

2. निम्नलिखित शब्दों के बांग्ला और हिंदी पर्याय लिखते हुए इनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए। **10**

चर्चा	राग	तटस्थ	अतिरिक्त	अभ्यास
आयु	गंभीर	स्रोत	प्रतिष्ठा	मानसिक

3. निम्नलिखित अंशों का हिंदी में अनुवाद कीजिए : **5X2=10**

(क)

আমী জানতাম যে তুমি আসবে,
যে দৌড়ে জিতেছে, সে পুরস্কার পাবে
সে ইতো দুর্বল হয়ে গেছে যে ও দাঁড়াতে পারে না
যেখানে আমি থাকি, সেখানে কোনো বাস যায় না
আজকে শহরে ধর্মঘট, সব য়াতায়াত বন্দ
নটা বাজলে, আমরা বাইরে যাবো
রাম বাড়িতে আছে
ওর সংগে আমার আলাপ নেই
তিনি নাকি খূব বিখ্য়াত
তুমি বাইরে যাবে নাকি

(ख)

বাবা আমার জন্য় বই এনেছেন
তুমিই বলো আমি কোথায় যাই
বসোই না!

কতই না দেশে ঘুরেছি
আপনাকে ঘুম থেকে জাগাই নি
খুব হেঁটেছি বলে পায়ে খুব কষ্ট
তাঁর দুর্বল শরীর দেখে আমার বুকে কষ্ট হত
ইচ্ছা করে এই অলস দুপুরে ঘুমিয়ে থাকি
সে কল্পনা সার্থক হবে, কার জানা ছিল
যা হোক একটা কিছু খান না

4. निम्नलिखित अंशों का हिंदी में अनुवाद कीजिए। **10X7=70**

(A)
উল কাঁটা হাতে ধরাই ছিল, সাপ ডিজাইনও একটু একটু এগোচ্ছিল। স্বর্ণর এরকমই অভ্যাস, হাত খালি যায় না। কখনো নতুন উলে রোদ্দুরের স্কুলের কার্ডিগ্যান বুনে দিচ্ছেন, কখনো বাঁচা উলে রং মিলিয়ে মিনির স্নান করে উঠে পরার ছোট কিছু একটা হাল্কা শীতের জন্য মজুত রাখছেন।
ওঁর হাত তো চলতেই থাকে, কিন্তু মাথা ফাঁকা যায় না। এই যেমন এখন, কেবল ডিজাইনটা ঠিক জোড়া সাপের মত উঠছিল, কিন্তু মাথায় ওই সাপের মতোই একটা চিন্তা পাক দিয়ে, খুলে আবার পাক দিয়ে উঠছিল—ওদের মতোই উনিও ভাবছিলেন তুলি কোথায় বেপাত্তা হ'ল।
ওরা মানে স্বর্ণর দুই নাতি নাতনী—রোদ্দুর আর মিনি। এই খানিক আগেই ওঁর ঘরে এসে আচার নিয়ে গেছে—ওটা ওদের ডেলি রুটিনের মধ্যেই পড়ে কিনা। কিন্তু মুখগুলো ওদের শুকনো, গম্ভীর। কারণ আর কিছুই না—ওই তুলি—ওদের আধ-পোষা সাদা বিড়ালছানা। আধা এই জন্য যে বিড়াল নিয়ে আদিখ্যেতায় অনুরুপা বড় রকম 'না' করে রেখেছে। ও অফিসে বেরোলে এরা রান্নামাসির চোখ এড়িয়ে ভাতের পাতের মাছ, নারকেল মালায় দুধটুকু তুলিকে দেয়। তুলি গা ফুলিয়ে কোলে উঠে আদর খায়, ভাত-মাছ ফুরোলেই টুক করে নেমে হাওয়া হয়।
এইরকমই চলছিল। হঠাই দুদিন থেকে সে একেবারে বেপাত্তা। মিনি তো সকালের দুধ ওটসও সরিয়ে রাখছিল কদিন। ওর মতে তুলি যেন রোগা হয়ে যাচ্ছে, ওটস ওর দরকারই দরকার। আর তাছাড়া ওটস মিনির নিজেরই বিতিকিচ্ছিরি লাগে, তার থেকেই যদি তুলির জন্য দু-এক চামচ সরানো যায় মন্দ কি? কিন্তু কই তুলি? সেই যে মাছ ওয়ালার আঁশবঁটির পাশে ভবিষ্যুক্ত হয়ে বসেছিল তারপর থেকেই ওকে পাওয়া যাচ্ছে না।
দুদিন পরে আজ তাই রোদ্দুর নীচের ক্যারাম ঘরে একটা জরুরি মিটিং ডেকেছে। সেই যেমন পুজোর আগে কম্যুনিটি হলে পুজোর আগে ডাকে না! অনেকটা তেমনই। বলে দেওয়া হয়েছে চা বিস্কুট মানে ক্রীম বিস্কুট, টক মিষ্টি চানাচুর যে যা পারবে আনতে পারে।

(B)
কিছুক্ষণ আগেই এই ঘরে বড় ধরনের একটা ঝামেলা হয়ে গেছে। অন্তত ঘরের পরিবেশ সে কথাই বলছে। খাটের চাদর এলোমেলো। মেঝের উপর জল গড়াচ্ছে। একধারে রাশিকৃত খবরের কাগজের টুকরো পড়ে। একটা চায়ের পেয়ালা উপুড় হয়ে আছে। তলানী চা মাটিতে পড়েছে এবং মাটিতে পড়ে কিছুটা বাষ্পীভূত হয়ে এখন সেটা চটচটে ও আঠালো হয়ে উঠেছে। ঘরের ভেতর একটা টিউব জ্বলছে। খাটের নিচে একটা রঙিন বেডকভার পড়ে থাকতে দেখা যাচ্ছে এবং সেটাও আছে খবরের কাগজগুলোর মতোই টুকরো টুকরো অবস্থায়।
এমন বিশৃঙ্খল পরিস্থিতির একটা বাড়ির সামনে হঠাৎ একখানা হলুদ রঙের ট্যাক্সি এসে দাঁড়ালো। রূপাকে নিয়ে তার ননদ হাসপাতালের দিকে চললো। বাড়িতে এখন আছে রূপার দুই মেয়ে, ছয় বছরের বুবু আর চার বছরের মুমু। তারা একাই থাকবে এবং না জানি দুজনে একা একা কী না কী করবে! রূপা শঙ্কিত হয়ে একবার ঘরের দিকে তাকিয়ে একটা দীর্ঘ নিঃশ্বাস ফেললো। তবে তাকে এই মুহূর্তে যেতেই হবে। তাই অপেক্ষা না করে সে বাড়ির বাইরে বেরিয়ে এল, তারপর ট্যাক্সিতে গিয়ে বসলো।

রুপার জানা ছিল না, তাকে এমনভাবে হঠাৎ হাসপাতালে আসতে হবে। রুপার ননদ খুব কাছে থাকে, অসময়ে খবর পেয়ে একমাত্র সে-ই ছুটে আসতে পেরেছে। রুপা যখন গিয়ে পৌঁছালো, হাসপাতালে তখন জুনিয়ার ডাক্তাররা কর্মবিরতি ঘোষণা করেছেন। সমস্ত রুগী যত্রতত্র বেডে পড়ে আছে। অনেকে আবার জায়গাও পায়নি, তারা মাটিতে বিক্ষিপ্তভাবে পড়ে আছে। রুপাও হাসপাতালে এসে তেমন এক কোণে পড়ে থাকলো। তার ননদ একা একা রুপাকে অন্য কোনও হাসপাতালে নিয়ে যেতে ভরসা পেল না।

(C)

প্রেমের ব্যাপারে শ্যামলীর মতামত জানতে চেয়েছিল রাহুল। প্রেম নিয়ে শ্যামলী কি ভাবে?
—এ বিষয়ে তোর চেয়ে বেশি জানা আমার পক্ষে সম্ভব নয়। শ্যামলী বলেছিল। তুইই তো যখন তখন প্রেমে পড়িস। আমি এখনও প্রেম করিই নি।
—সে তো আমিও করিনি। কিন্তু প্রেমে পড়ে থাকতে পারিস। প্রেম করা আর প্রেমে পড়া এক নয়।
ঘাড় নেড়ে সায় দিয়েছিল শ্যামলী—তাও ঠিক। কিন্তু আমি প্রেমে পড়েছি কিনা সে খবর তোকে দিতে যাব কেন?
—সে খবর চাইছি না। কোনো ব্যক্তিগত কৌতূহল প্রকাশ করছি না। শুধু কিছু সাধারণ প্রশ্ন আছে। যেমন ধর, প্রেম কতটা জরুরী? প্রেমের জন্য কতটা ক্ষতি স্বীকার করা উচিত বা সম্ভব?
—আগে বল প্রেম বলতে কী বোঝাচ্ছিস? সত্যিকারের ভালোবাসা?
—হ্যাঁ, একেবারে খাঁটি জিনিসের কথাই বলছি। মনে আলসার হলে যেরকম হয়।
—আমার মনে হয় তার জন্য নিজের সমস্ত কিছু ত্যাগ করা যায়। তুই হয়তো বুঝবি না। তোর বোঝার ক্ষমতা আছে কিনা সন্দেহ। শ্যামলী ঘাড় উঁচু করে বলেছিল।
—নিজেকে অত সুপিরিয়র ভাবিস না। আমিও একটা শিক্ষিত পরিবারের ছেলে।
—ঠিক আছে। ঠিক আছে। রাগিস না। কী জানতে চাস বল, আমি পারলে উত্তর দেব।
—কারো পক্ষে কি একসাথে একাধিক লোকের প্রেমে পড়া সম্ভব? গম্ভীরভাবেই জিজ্ঞেস করেছিল রাহুল।
ফিক করে হেসে শ্যামলী বলেছিল—কেন সম্ভব নয়? প্রেমে তো কেউ ভেবেচিন্তে পড়ে না। ওটা হয়ে যায়। হয়ে গেলে আটকাবে কে?
—তোর সেরকম হলে কী করবি?
—সব-কটাকে বিয়ে করব। দ্রৌপদীর মতো। বলেই চোখ পাকিয়েছিল শ্যামলী—আবার পার্সোনাল কোয়েশ্চেন?
রাহুল থামেনি—আর ধর বিয়ের পর যদি দেখিস ভালোবাসা কমে যাচ্ছে। বা নেই, তখন?

(D)

গ্রামের রাস্তা ছাড়িয়ে সোজা পূর্বদিকের রাস্তার একপাশে পূর্বকথিত সেই ডোবা (পগার), ছোটবেলায় পুতুল সিদ্ধেশ্বরীকে কোলে নিয়ে লাল গাইয়ের গুঁতায় গড়িয়ে পড়ে গেছিলাম যে পগারের তলায়। এই পগারের পাশ দিয়ে রাস্তা সোজা কিছুদূর পর্যন্ত গিয়ে বাঁয়ে বাঁক ঘুরল। এই বাঁকের পাশে ধানক্ষেতের পাশ ঘেঁষে উচু রাস্তা। এই রাস্তার উপরেই ছিল বিরাট আকারের একটি আমগাছ। মুকুলে বিভূষিত গাছটির তলা দিয়ে পালকি যাচ্ছে। আমের গুটি (করা) থেকে শুরু করে কাঁচা, পাকা, সব অবস্থাতেই সেই গাছের তলায় একদা আমাদের থাকত সর্বক্ষণের উপস্থিতি।
ক্রমে পালকি গিয়ে পৌঁছল বড় সড়কে। বেহারাগণ দ্রুততালে রাস্তার ধূলা উড়িয়ে চলল। পালকির দরজা একটু ফাঁক করে জল ভরা চোখে তাকিয়ে দেখছি, দূরে, স্বপ্নের মায়াপুরী আমাদের গ্রামটিকে। তাকে আজ আমি চিরদিনের মত পর করে চলে যাচ্ছি। ফেলে যাচ্ছি চিরমধুর অনেক স্মৃতিচিহ্ন। রাস্তাঘাট, গাছপালা, মাঠ, গোপাট, আখের ক্ষেত, সবই পিছন থেকে দ্রুত সরে যাচ্ছে। একে একে দেখছি আর মনে পড়ছে পিছনে ফেলে যাওয়া এক একটি মজার ঘটনার কথা।
পথে পড়ল একটা আখের ক্ষেত। গ্রামের প্রান্তে। চারধারে পাটকাঠির ঘন বেড়া দিয়ে সুরক্ষিত ছিল সেই আখ ক্ষেত। একবার আমি, বিমলা, ঊষা, কল্যাণী, জ্যোৎস্না, আর সাফি (একটি মুসলিম মেয়ে) মিলে কিভাবে সেই আখ ক্ষেতে ঢুকে আখ ছিঁড়ে এনেছিলাম, সেই দস্যিপনার কথা মনে পড়ে গেল। বর্ষার জলে অনবরত

ভিজে কমজোর হয়ে যাওয়া পাটকাঠির বেড়া ভেঙে আখ ক্ষেতে ঢুকেছিলাম আমরা, আর ইচ্ছামত আখ ভেঙে নিয়ে নিরাপদেই পালিয়েছিলাম। তখন অবশ্য আমাদের সকলেরই বয়স ছিল নয় কি দশ।

(E)

শৈশবসংগীতে কবি এক বালকের কথা লিখেছিলেন যাকে মুমূর্ষু পিতার কাছে দেখা গেল গভীর রাতে যখন সারা পৃথিবী নীরব নিশ্চুপ—যে দেখছে বীর বাবার হৃদয়ে ছুরিকা বিঁধানো—বিবর্ণ মুখে রোষের অনল, যিনি সন্তানকে একটা পাল্টা রক্তপাতের প্রতিশোধের প্রতিজ্ঞায় বাঁধছেন। প্রতিহিংসার ভাবনা নিয়ে বালক ক্ষত্রকুলপ্রভুর কাছে শপথ নিয়ে বেরিয়ে আসে পিতার হত্যাকারীকে উপযুক্ত শাস্তি দিতে, কিন্তু হায়—যে মালতীবালার প্রেমে প'ড়ে ভালোবাসার নরম অনুভূতিগুলি তার বুক থেকে প্রতিশোধের জ্বালা দেয় মুছে, দেখা যায় তারই পিতা হলেন সেই অজানিত শত্রু যাকে বীরবালক খুঁজে বেড়িয়েছে সারা পৃথিবীতে। তার পরের হাহাকারের গল্প সবাই আঁচ করতে পারবে। অথচ সেই অশোক বালক তখন ভূমির 'পরে বসে "আপন ভাবনা-ভরে" দুঃখ ও বিষাদের কথা ভুলে যাবে, সেটাই শিশুর ধর্ম। সেই শৈশবকে আমরা বোধ হয় বিসর্জন দিতে চলেছি অত্যন্ত নিষ্ঠুরতার সঙ্গে, যার ফলে আজ সন্ত্রাসের পথে শিশু-কিশোরেরাও হাতে অস্ত্র তুলে নিচ্ছে। এটাই সম্ভবত আজকের সভ্যতার সবচেয়ে বড় সংকট অথচ এই 'ভাবনা' বা 'দুর্ভাবনা' নিয়ে আমরা কেউ বিচলিত নই।

মনে হয় এ-যেন কোনো মনগড়া পুরাণ-কাহিনী পড়ছি যেখানে ভস্মাসুর শিবের আশীর্বাদ পেয়ে প্রথমেই পৃথিবীর বুক থেকে মুছে দিতে চাইছে 'বসন্ত'-কে, কেননা এ সেই সময় যখন পৃথিবী সেজে ওঠে অপরূপ সাজে; বিসর্জন দিতে চাইছে বর্ষা-কে কারণ এ-এক এমন ঋতু যখন প্রচুর নতুন প্রাণ নবীন সম্ভাবনার বীজ-বপন করা হয়—কারণ যা কিছু শিব ও সুন্দর, ও তারই বিরোধী। অসুরের মনে হয়েছে ঋতুর এই বিবিধতা—এ-সবই ঈশ্বরের ষড়যন্ত্র, জগৎ জুড়ে যদি একটি ঋতুই থাকে তো ক্ষতি কি? এত শত প্রাণীরই বা কোন উপযোগিতা? কেউ হাঁটে, কেউ সাঁতরায়, কেউ ওড়ে, কেউ বুকে হাঁটে—কী দরকার এত রকমের? এক সুর, এক গান, এক তান, এক কথা, একই পরিধান—না-জানি কত সুন্দর হবে সেই পৃথিবী? অত আলো, এমন রঙের বিবিধতাই বা কেন? সবাই যদি হয় লাল, নয় সবুজ অথবা গেরুয়া পতাকার তলায় এসে দাঁড়ায়, তাতে কী ক্ষতি? যে কেউ এই একরূপতার বিরোধী, তাকে নির্মমভাবে দমন করতে হবে। প্রতিটি সংঘর্ষে, প্রতি রণে, প্রত্যেক বিশ্বযুদ্ধে এইটেই করতে চেয়েছে ভস্মাসুর, অথচ সে গল্প কেউ বলে না। এমন গল্পের পৃথিবীতে হানাহানি হবে একটা বিশাল প্রদর্শ-ক্রীড়া যা দেখবে সবাই আর যা নিয়ে মেতে উঠবে, অসিযুদ্ধ থেকে ষাঁড়ের লড়াই অথবা আজকের চর্ম-গোলকের খেলা তার কাছে ফিকে হয়ে যাবে।

(F)

রবীন্দ্রনাথের মত সত্যজিৎ রায়ও জন্মগ্রহণ করেছিলেন এমন এক বাড়িতে যেখানে নিয়মিত শিল্প সাহিত্যের চর্চা ছিল। উপরন্তু ছিল বিজ্ঞানের চর্চাও। উপেন্দ্রকিশোর বাড়িতে ছাপাখানা বসিয়ে 'সন্দেশ'-এর মত একটি উঁচুমানের কিশোর পত্রিকার সূচনা করেন। পরবর্তী কালে তাঁর ভাই সুবিনয় ও কুলদা এবং পুত্র সুকুমার, কন্যা লীলা প্রভৃতির হাত ধরে সেই পত্রিকা আরো উন্নতি করে। উপেন্দ্রকিশোরকে বাংলা শিশু-কিশোর সাহিত্যের অন্যতম অগ্রপথিক বলা চলে। একেবারে বিংশ শতাব্দীর গোড়াতে এক পরাধীন দেশে, একটি আঞ্চলিক ভাষাতে উঁচু মানের সাহিত্য রচনা করে তিনি এক অভূতপূর্ব ঘটনা ঘটালেন। দুর্ভাগ্যজনকভাবে ত্রিশের দশকে সুকুমারের অকাল মৃত্যুর ধাক্কা সামলাতে না পেরে বন্ধ হয়ে যায় সন্দেশ। আবার ছয়ের দশকে সুভাষ মুখোপাধ্যায়কে সঙ্গী করে সত্যজিৎ পুনরায় চালু করেন এই পত্রিকাটি। সেইসময় সত্যজিৎ চিত্র-পরিচালক রূপে জগদ্বিখ্যাত, তা সত্ত্বেও যে তিনি এই কাজের জন্য সময় বার করতে পেরেছিলেন তার মূল কারণ নিঃসন্দেহে কিশোর সাহিত্যের প্রতি তাঁর আজীবনের অগাধ অনুরাগ। জীবনস্মৃতিতে রবীন্দ্রনাথ বলেছিলেন, "ছেলেবেলার আমার একটা মস্ত সুযোগ এই যে, বাড়িতে দিনরাত্রি সাহিত্যের হাওয়া বহিত।" একই কথা সত্যজিতের ক্ষেত্রেও প্রযোজ্য। তাঁর ক্ষেত্রে হয়তো কথাটি মূলতঃ কিশোর সাহিত্যই হবে।

এরপরে যখন তিনি সিগনেট প্রেসে যোগদান করেন, দিলীপকুমার গুপ্তের সহযোগিতায় বিভূতিভূষণের পথের

পাঁচালীর কিশোর সংস্করণ 'আম আঁটির ভেঁপু' পড়ে তিনি মুগ্ধ হন। বইটি অলংকরণ করাকালীনই তাঁর মনে এটিকে চলচ্চিত্রায়িত করার কথে মনে আসে।
ষাটের দশকে সুভাষ মুখোপাধ্যায়কে নিয়ে সন্দেশ পত্রিকার পুনরাবির্ভাব করাতে গিয়েই কিশোর সাহিত্যে তাঁর নিজের হাতেখড়ি। শুরু হল গল্প লেখা। সন্দেশে ফেলুদার আত্মপ্রকাশ হয়েছিল খুবই সাধারণ ভাবে। দার্জিলিং-এ — 'ফেলুদার গোয়েন্দাগিরি' নামক একটি গল্প দিয়ে। সম্ভবত তখনো তিনি ভাবেননি যে এই চরিত্রটি এতটা জনপ্রিয় হবে। ১৯৬১-তে সন্দেশ শুরু হওয়ার পরও ১৯৬৫ অবধি ফেলুদা আবির্ভূত হননি। সন্দীপ রায় আমাদের জানিয়েছেন যে সত্যজিৎ এই গল্পটি অন্য গল্পের মতই শুরু করেছেন, সেভাবে চরিত্র নিয়ে ভাবেননি। কথাটা খুবই ঠিক।

(G)
বাংলা কবিতার ইতিহাসে রাজন্যশাসিত কোচবিহারের বিশেষ অবদান রয়েছে। বাংলা অনুবাদ সাহিত্যের পথিকৃৎ হিসেবে গণ্য হতে পারেন কবি মাধবকন্দলী। দুর্গাবরের বাংলা রামায়ণ এ প্রসঙ্গে উল্লেখ্য। মহারাজা নরনারায়ণের রাজত্বকালে ষোড়শ শতাব্দীর কবি রামসরস্বতীর কথা পাই যিনি সংস্কৃত মহাভারতের সবগুলি পর্ব অনুবাদ করেছিলেন। দ্বিজ হৃদানন্দের চৈতন্যজীবনীকাব্য থেকে পৃথক চরিতসাহিত্য ধারার খোঁজ পাওয়া সম্ভব। মহারাজা হরেন্দ্রনারায়ণ ও তাঁর পুত্র শিবেন্দ্রনারায়ণ গান রচনা করেছিলেন। শিবেন্দ্রনারায়ণের পত্নী বৃন্দেশ্বরী দেবীর লেখা 'বেহারোদন্ত' বাংলা সাহিত্যে প্রথম মহিলা কবি দ্বারা লিখিত ইতিহাস। এই আখ্যানকাব্যটি প্রকাশিত হয়েছিল ১৮৫৯ খ্রিস্টাব্দে। মহারাণী সুনীতি দেবীর লেখা 'অমৃতবিন্দু', নিরুপমা দেবীর লেখা 'বসন্তমালিকা', 'গোধূলী,' 'শেষের কবিতা' কাব্যগ্রন্থগুলি থেকে আবহমান কালের বাংলা কবিতার কিছু পরিচয় পাওয়া যেতে পারে।
কোচবিহারের কবিতা বলতে এই জেলার কবিদের দ্বারা লিখিত কবিতাকেই বোঝাতে চেয়েছি। জানি সাহিত্যকে কোনো নির্দিষ্ট ভূগোলের মাধ্যমে চিহ্নিত করা যায় না। তবে এই অঞ্চলে জন্ম ও জীবনযাপনের মধ্য দিয়ে কবিরা যে নিজস্ব আত্মপরিচয় গড়ে তুলতে চেয়েছেন এবং পেরেছেন, তাঁদের কবিতার সূত্র ধরে রাজনগরের সেই অনন্য স্বরটিকে চিনে নিতে অসুবিধা হয় না আমাদের। স্বাধীনতা-উত্তরকালে 'কোচবিহারের কবিতা' প্রধানত লিটল ম্যাগাজিনকে কেন্দ্র করে বিকাশ লাভ করে। স্বাধীনতা-পূর্ব সময়ে কোচবিহার থেকে প্রকাশিত 'পরিচারিকা' (নবপর্যায়), 'কোচবিহার দর্পণ' প্রভৃতি গুরুত্বপূর্ণ পত্রিকায় ব্যাপকভাবে কাব্যচর্চা হত। আমরা জানি ১৯৫০ সালের ১লা জানুয়ারি থেকে স্বাধীন করদমিত্র রাজ্য কোচবিহার পশ্চিমবঙ্গের একটি জেলায় পরিণত হয়। এবছরই প্রকাশিত হয় কোচবিহারের প্রথম লিটল ম্যাগাজিন—'অয়ন'। সম্পাদক প্রবোধ চন্দ্র পাল ছিলেন বিশিষ্ট কবি। ষাটের দশকে প্রকাশিত হয় কবি রণজিৎ দেবের সম্পাদনায় 'ত্রিবৃত্ত' পত্রিকা। ১৯৭০-র মার্চ মাসে অরুণেশ ঘোষ শুরু করেন 'জিরাফ' পত্রিকা। কবি স্বপনকুমার রায় বিভিন্ন সময় প্রকাশ করেন একাধিক পত্রিকা—'অন্যস্বর' (১৯৭৯), 'কবিমেলা'(১৯৮৩), 'সাগরদীঘি' (১৯৮৬), 'জেরোম্যাগ' (১৯৯০)। এবারে আমরা চলে আসি কবিদের প্রসঙ্গে। কোচবিহারের কবিদের আলোচনায় অরুণেশ ঘোষ অগ্রগণ্য। তাঁর প্রথম কাব্যগ্রন্থ 'শব ও সন্ন্যাসী' প্রকাশিত হয়েছিল ১৯৮১ সালে। 'গুহা মানুষের গান' (১৯৮৫), 'সহজ সন্তান যাঁরা' (১৯৮৯), 'দীর্ঘ নীরবতা' (১৯৯৪), 'বিপথিক' (১৯৯৫), 'কাল কবীরের দোহা' (২০০২), 'কবিতা সংগ্রহ' (২০০৬), 'পশুরাও অন্তর্লীন হাসে' (২০০৭) গ্রন্থের মধ্য দিয়ে তিনি নিজস্ব কাব্যভুবন তৈরি করে নিতে পেরেছিলেন। ১৯৮০ সালে 'জিরাফ' পত্রিকার সম্পাদকীয়তে অরুণেশ ঘোষ লিখেছিলেন—"আমার কাছে কবিতা এক প্রচণ্ড শক্তি, যা আমার অভিজ্ঞতা—চেতনা থেকে নির্গত হয়ে সমস্ত জগৎকে আক্রমণ করে এবং তাকে বদলাতে চায়।

— * —